इंडियन एक्सप्रेस समूह

जनसत्ता

महानगर नई दिल्ली सोमवार 1 मार्च, 2010 रु. 3.00 (12 पेज) दिल्ली, कोलकाता, चंडीगढ़, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

कथक में रचनात्मकता

शशिप्रभा तिवारी

नृत्य

पारंपरिक कथक में शीला मेहता जाना-पहचाना नाम है। तेईस फरवरी को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में उन्होंने नृत्य रचना 'मेरा सफर' पेश किया। इस प्रस्तुति को भरपूर सराहना मिली। शीला मेहता ने कथक की तालीम पंडित प्रहलाद दास और पंडित विजय शंकर से ली है। इनके अलावा वे समय-समय पर वरिष्ठ गुरुओं से मार्गदर्शन लेती रही हैं, इसलिए उनके नृत्य में अच्छी रचनात्मकता के दर्शन हुए। उन्होंने 'चरण कथक' और 'चैतन्य योग' पर कुछ रचनात्मक कार्य भी किया है।

शीला ने अपनी नृत्य प्रस्तुति का आरंभ यात्रा से किया। इसमें प्रकृति के माध्यम से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की वंदना की गई। दूसरी प्रस्तुति में नृत्य के मूल उद्देश्य के बारे में नृत्यांगना शीला ने व्याख्या पेश की। नृत्यांगना शीला का मानना है कि आज नृत्य पेश करते समय कलाकार अपनी खुशी की बजाय दर्शक की खुशी का खयाल रखने लगा है। इससे कलाकार आत्मिक खुशी को महसूस करने से वंचित रह जाता है।

नृत्यांगना शीला ने इस खुशी का अहसास शुद्ध नृत के जरिए करवाया। तीन ताल में निबद्ध शुद्ध नृत में आमद, तिहाइयों, परण आदि को शामिल किया था। उन्होंने पंडित बिरजू महाराज की गिनती की तिहाई में सीता हरण के दृश्य को खूबसूरत अंदाज में पेश किया। पंडित विजयशंकर रचित एक तिहाई में नृत्यांगना शीला ने नौ 'धा' की विशेषता को पेश किया। इसमें पैर का काम और नौ रसों

शीला मेहता

को मुख के भावों के माध्यम से मुखरित किया। उन्होंने नटराज के रूप को पेश किया। लड़ी और जुगलबंदी में भी नृत्यांगना ने पैर का प्रभावकारी काम दिखाया।

अगले अंश में नृत्यांगना ने 'बरखा बहार' पेश किया। इसमें जीवन की चार अवस्थाओं- बचपन, जवानी, प्रौढ़ावस्था और बुढ़ापे में बारिश को अलग-अलग तरह से महसूस करने के दृश्य का चित्रण पेश किया गया। यहां भावों को अनेक बंदिशों के जरिए पिरोया गया था। इसमें बचपन के आनंद को बंदिश 'बरखा की ऋतु आई' पर दर्शाया। दूसरी रचना 'घिर-घिर आई रे कारी बदरिया' पर युवावस्था और प्रौढ़ावस्था के शृंगार व विरह के भावों का वर्णन पेश किया। अंत में, जीवन का दर्शन- आत्मा यानी राधा और परमात्मा यानी कृष्ण से मिलन के भावों को चित्रित किया। इसके लिए उन्होंने बंदिश-'उमड़ घुमड़ घन गरजत नभ पर' का चयन किया था। नृत्य में नाव, झूले, घूंघट, मोर, बांसुरी व नजर की गतों का प्रयोग प्रसंगानुकूल दिखा। वैसे नृत्यांगना शीला की प्रस्तुति अच्छी थी, पर यदि इस समय वे वसंत या होली पर कुछ पेश करतीं तो ज्यादा बेहतर होता।

नृत्यांगना ने परंपरागत कथक को नया आयाम देते हुए अंतिम पेशकश 'लकुटी तराना' से लोगों को विभोर कर दिया। इसमें कथक के टुकड़े, तिहाई और चक्रदार तिहाइयों के साथ डांडिया रास की झलक पेश की गई। शास्त्रीय नृत्य में लोकनृत्य के अंश का यह सुंदर समन्वय था। इस प्रस्तुति में उनका साथ शिष्याओं ने भी खूबी दिया। श्रुति और रेखा के नृत्य में अच्छा तालमेल दिखा।

आनंद की अनुभूति लक्ष्य को पाने में नहीं बल्कि, लक्ष्य तक पहुंचने की यात्रा में कहीं अधिक है। अपने नृत्य के जरिए शीला ने दर्शकों को यही संदेश दिया। इस कथक प्रस्तुति में उनके साथ संगतकारों में शामिल थे- तबले पर विवेक मिश्र और सारंगी पर अहसान। बंदिशों को सुर दिए सोमनाथ मिश्र ने।